अकोट-धारणी मार्ग में फंसी एम्बुलेंस

गोलाई, धुलघाट परिसर मे आदिवासी परेशान

संवाददाता, 23 सितंबर

धारणी- धारणी तहसील के समाजसेवी दत्ता नागरगोजे की तीन दिनों पूर्व एक हादसे में मौत हो गई, जिससे धुलघाट परिसर में शोक की लहर थी. शव लाते समय झरी गांव के समीप रास्ते में एम्बुलेंस फंसने से शव 12 घंटे देरी से गोलाई गांव में पहुंचा, जिसके कारण लोगों में हिवरखेड़-बारातांडा इस खराब मार्ग के प्रति असंतोष व्याप्त है. मध्यप्रदेश के खकनार, तुकईथड़, देड़तलाई और मेलघाट के सुसर्दा, गोलाई, राणीगांव, सावलीखेड़ा तथा धुलघाट रेलवे के नागरिकों को हिवरखेड़ मार्ग से अकोट जाना पड़ता है.

खासतौर पर अस्पताल के लिए जाते समय इस रास्ते पर बहुत ही कीचड़ होने से लोगों को परेशानी होती है. दत्ता नागरगोजे का शव ला रही एम्बुलेंस भी यहां फंस गई थी. ट्रैक्टर बुलाकर एम्बुलेंस 12 घंटे के बाद निकाली गई. 5 वर्षों से अकोला-खंडवा रेल बंद हो गई है, फिर भी सरकार ने सड़क मार्ग की मरम्मत नहीं की है. हिवरखेड़ (जिला अकोला) से रेलवे धुलघाट मार्ग की तुरंत मरम्मत कर यातायात के लिए उपलब्ध करने की मांग लोगों द्वारा की जा रही है.

अंकिता वानखड़े विवि में मेरिट

संवाददाता, 23 सितम्बर

तिवसा- संत गाड़गेबाबा अमरावती विश्वविद्यालय अंतर्गत राम मेघे कॉलेज एंड इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट कॉलेज की छात्रा अंकिता वानखड़े ने शानदार सफलता हासिल की. इलेक्ट्रीक एंड इलेक्ट्रॉनिक्स बैच 2019-20 सत्र की परीक्षा हाल ही संपन्न हुई. परीक्षा में अंकिता वानखड़े ने 9.96 फीसद अंक प्राप्त कर विश्वविद्यालय में मेरिट आने का गौरव हासिल किया. उसकी सफलता पर सर्वत्र उसका अभिनंदन किया जा रहा है.

अक्स अंचल का

जामठी गणेशपूर में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम

वरुड- महाराष्ट्र शासन कृषि विभाग आत्मा योजना अंतर्गत किसानों व खेत मजूदरों के लिए कीटनाशक का छिड़काव, तुषार सिंचाई यंत्र की देखभाल व दुरुस्ती विषय पर किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन तहसील के जामठी गणेशपूर में किया गया. उमाकांत घ्यार, भूषण गुलसुंदरे, तहसील तंत्रज्ञान व्यवस्थापक एल.जी. श्रीराव, सहायक तंत्रज्ञान व्यवस्थापक एच.बी. बरांगे, कृषि सहायक आर.वी. रावंडे व किसान, कृषि मित्र उपस्थित थे.

तहसीलदार अतुल पाटोले का सत्कार

धारणी- तहसीलदार अतुल पाटोले का तबादला होने पर स्थानीय राशनदुकानदार संगठन तथा पत्रकारों ने उनका बिदाई समारोह आयोजित कर सत्कार किया. पत्रकार तस्मीन शेख, सुलेमान मेमन, शकील अहमद, रवि नवलाखे, नायब तहसीलदार नाडेकर, निलेश सपकाल, संगठन के जगदीश मालवीय, संतोष बैसे, आसिफ खान, कृष्णकुमार पाटिल, संतोष मालवीय उपस्थित थे.

संत गाड़गेबाबा के सहयोगी भाऊ काले से भेंट

कुऱ्हा- संत गाड़गेबाबा के सहयोगी व गाड़ी चालक 92 वर्षीय भाऊराव काले के तपोवन आगमन पर प्राचार्य डॉ. अरविंद देशमुख, रासेयो समनवयक डॉ. विभा देशपांडे ने उनसे भेंट कर संवाद साधा और गाड़गेबाबा की दिनचर्या की जानकारी ली. इस दौरान प्राचार्य डॉ. देशमुख ने उन्हें शाल, श्रीफल, कपड़े, टोपी, मिठाई देकर सम्मानित किया.

धारणी में मंजूर करें सत्र न्यायालय

एड. राजू गोंडाने ने मुंबई हाईकोर्ट के न्यायाधीश को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, 23 सितंबर

धारणी- अति दुर्गम परिसर के पक्षकारों को न्याय दिलाने के लिए सुविधाजनक होगा, इस दृष्टिकोण से 'न्याय आपके द्वार पर' इस संकल्पना से मेलघाट के धारणी में सत्र न्यायालय (सेशन कोर्ट) शुरू करने की इजाजत दें, इस आशय का ज्ञापन हाल ही में स्थानीय वकील संघ द्वारा मुंबई हाईकोर्ट के न्यायाधीश को सौंपा गया है. भौगोलिक दृष्टि से विस्तार के साथ फैले हुए मेलघाट के पक्षकारों को न्याय दिलाने सुविधाजनक होने के लिए 'न्याय अपके द्वार पर' इस अति महत्वाकांक्षी संकल्पना से धारणी में फिलहाल शुरू दिवानी व फौजदारी न्यायालय की इमारत में नए सिरे से सत्र न्यायालय (सेशन कोर्ट) मंजूर करने के लिए इजाजत दी जाए, इस संदर्भ में धारणी के वकील संघ द्वारा मुंबई हाईकोर्ट के न्यायाधीश की ओर लिखित ज्ञापन भेजा गया है. जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि, अतिदुर्गम परिसर के तौर पर मेलघाट का राजस्व मुख्यालय रहने वाले धारणी तहसील में कुल 186 गांव समाविष्ट किए गए हैं. उपरोक्त गांवों का फौजदारी क्षेत्र धारणी पुलिस थाना क्षेत्र में आता है.

वर्तमान स्थिति में अचलपुर स्थित सत्र न्यायालय यह धारणी मुख्यालय से 95 किमी दूरी पर बसा हुआ है. धारणी तहसील के आखिरी छोड़ कर बसा हुआ यह गांव अचलपुर के सत्र न्यायालय से करीबन 160 किमी दूरी पर है. ऐसे कठिन हालात में धारणी तहसील के ग्रामीण पक्षकार को सत्र न्यायालय तक पहुंचने के लिए काफी बड़ी मशक्कत करनी पड़ती है. इसके लिए पक्षकार को सबसे पहले अपने निवासी गांव से धारणी में आना पड़ता है. पश्चात उसी दिन घाट में मोड़ मार्ग को पार कर अचलपुर तक पहुंचना पड़ता है. लेकिन अचलपुर तक पहुंचने के लिए पक्षकार को धारणी से अचलपुर जाने के लिए दोपहर 4 बजे के बाद आखिरी कोई भी बस सेवा नहीं है. अगर पक्षकार 4 बजे की बस पकड़कर निकलता है फिर भी वह 3 घंटों का सफर कर शाम में 7 बजे के पहले सत्र न्यायालय तक नियोजित समय में पहुंचना संभव नहीं है. इसलिए उपरोक्त ज्ञापन पर गंभीरता से विचार कर धारणी में सत्र न्यायालय मंजूर कर उसे तुरंत शुरू करने की इजाजत बहाल करें. ऐसी मांग का ज्ञापन मुंबई हायकोर्ट की ओर बार एसोसिएशन के अध्यक्ष एड. राजू गोंडाने ने भेजा है.

हॉल व्यवस्था भी उपलब्ध

धारणी के न्यायालय की भव्य इमारत का निर्माण कई वर्षों के पूर्व किया गया है. इस इमारत के परिसर में फौजदारी न्यायालय के साथ ही एक अन्य हॉल में इसके पूर्व दिवानी न्यायालय भी शुरू किया गया था. वर्तमान स्थिति में उपलब्ध उसी हॉल में नए सिरे से सत्र न्यायालय शुरू करने की व्यवस्था भी उपलब्ध हो सकती है. इसके साथ ही न्यायदान की सेवा अधिक आसान व सुविधाजनक होनी चाहिए इस दृष्टिकोण से पक्षकार के लिए 'न्याय आपके द्वार पर' यह संकल्पना सही अर्थों में सार्थक साबित हो सकती है.

टाकरखेड़ा शंभू में किया जा रहा छिड़काव

संवाददाता, 23 सितंबर

टाकरखेड़ा शंभू- टाकरखेड़ा शंभू में पिछले कुछ दिनों से बड़े पैमाने पर सर्दी-खांसी, बुखार का प्रकोप शुरू है, जिससे ग्रामवासी हैरान-परेशान हैं. गंभीर दखल लेकर ग्राम पंचायत ने प्रतिबंधात्मक उपाय शुरू कर दिए हैं. गांव में मच्छरों के प्रतिबंध के लिए छिड़काव किया जा रहा है.

वायरल फीवर के मरीजों में बढ़ोतरी

जिले में फिलहाल डेंगू पैर पसारता जा रहा है. जुकाम-खांसी व बुखार डेंगू के प्राथमिक लक्षण होने से टाकरखेड़ा शंभू परिसर में वायरल से पीड़ित रोगियों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है. जिससे डेंगू सदृश्य बीमारी को लेकर ग्रामवासियों में भय देखा जा रहा है. ग्रामवासियों की मांग पर ग्राम पंचायत ने मच्छरों की रोकथाम के लिए पूरे गांव में छिड़काव शुरू कर दिया है, जिससे ग्रामवासियों में राहत देखी जा रही है.

बाइपास रोड के गड्ढों को लेकर प्रशासन का निषेध

- शिवसेना ने गड्ढों में हार-फूल डालकर की पूजा
- तत्काल गड्ढे न पाटने पर आंदोलन की चेतावनी

संवाददाता, 23 सितंबर

चांदुर रेलवे - स्थानीय बाइपास रोड पर पड़े बड़े-बड़े गड्ढों के बावजूद भी संबंधित विभाग की उदासीनता को देखकर रविवार को शिवसेना की ओर से एक अनूठा आंदोलन किया गया.

इन गड्ढों में हार-फूल डालकर उनकी पूजा करते हुए संबंधित विभाग प्रशासन का शिवसेना शहर प्रमुख स्वप्निल मानकर के नेतृत्व में तीव्र निषेध व्यक्त किया गया तथा तत्काल गड्ढे न पाटे जाने पर तीव्र आंदोलन छेड़ने की चेतावनी भी दी गई.शहर में वकील लाइन के मार्ग पर तथा आगे मोड़ पर बाइपास रोड उसी प्रकार पंप हाउस के समीप बड़े-बड़े गड्ढे पड़ गए हैं. इस सड़क पर जगह-जगह पड़े गड्ढों के कारण दुर्घटनाओं की संभावनाएं भी बढ़ गई हैं. उसी प्रकार इन गड्ढों में बारिश का पानी जमा होने से परिसर में गंदगी का साम्राज्य फैला नजर आता है. ऐसे में संबंधित विभाग का ध्यान आकर्षित करने हेतु शिवसेना ने इन गड्ढों की पूजा करके अनोखा निषेध आंदोलन किया. साथ ही इन गड्ढों को तत्काल न बुझाए जाने पर तीव्र आंदोलन छेड़ने की चेतावनी भी दी गई. आंदोलन में शिवसेना शहर प्रमुख स्वप्निल मानकर, किशोर यादव, प्रणव बोके, रोशन खंडार, मुकेश मेश्राम, संदीप जरे, सारंग भोंडे, अमोल गजभिये, शुभम देशमुख, अनूप पोलाड़ आदि सम्मिलित थे.

चांदूर बाजार पंचायत समिति में संगीत कुर्सी का नजारा

20 दिनों में 4 बीडीओ बदले

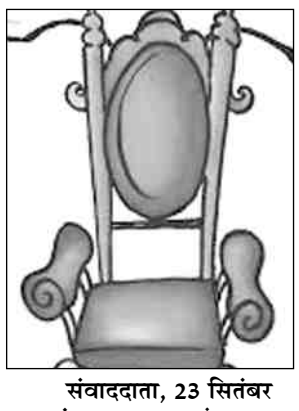

संवाददाता, 23 सितंबर

चांदूर बाजार- चांदूर बाजार पंचायत समिति में 20 दिनों में 4 बीडीओ बदले हैं. जिससे चांदूर बाजार पंचायत समिति में बीडीओ पद को लेकर संगीत कुर्सी का नजारा देखा जा रहा है. 2 सितंबर को गुटविकास अधिकारी (बीडीओ) डॉ. प्रफुल्ल भोरखड़े का ट्रांसफर हुआ. उनका प्रभारी चार्ज दर्यापुर के गुटविकास अधिकारी बालासाहब रायबोले को दिया गया. कुछ दिनों में ही रायबोले का चार्ज निकालकर दर्यापुर के ए-बीडीओ सुधीर अरबड़ को सौंपा गया. इसके बाद उनसे चार्ज लेकर दूसरे ही दिन भातकुली के बीडीओ संजय काले को चांदूर बाजार पंचायत समिति के बीडीओ का चार्ज दिया गया. इस तरह 20 दिनों में चांदूर बाजार पंचायत समिति को 4 गुटविकास अधिकारी मिले. जिससे इस पंचायत समिति में संगीत कुर्सी का खेल शुरू रहने से हैरत जताई जा रही है.

पीआरसी के दौरे से भागमभाग

प्रभारी अधिकारियों को कार्यालय की संपूर्ण जानकारी भी नहीं रहती. कर्मचारियों पर भी दबाव नहीं होता. आने वाला प्रत्येक अधिकारी कार्यालय प्रमुख को ही जिम्मेदार ठहराता है. यही कारण है कि पीआरसी के दौरे के मद्देनजर प्रभारी गुटविकास अधीकारी कुछ ही दिनों में चार्ज छोड़ रहे हैं.

एक के बाद एक प्रभारी चार्ज

अमरावती जिले में पंचायत राज समिति आ रही है, जिससे पंचायत समिति के कार्यों को गति मिली है. पुरानी धूल खाती पड़ी सभी फाइलों को निपटाने का काम युद्धस्तर पर चल रहा है. यही भागदौड़ ग्रामीण क्षेत्रों में ग्राम पंचायत स्तर पर भी नजर आ रही है. ग्राम पंचायत से खर्च की जा रही निधि का तालमेल जोड़ने के लिए बिलों की जोड़-तोड़ भी शुरू है. पंचायत समिति में प्रत्येक विभाग में अधिकारी व कर्मचारियों पर देखरेख रखने के लिए गुटविकास अधिकारी नियुक्त किए जाते हैं, लेकिन पंचायत राज समिति जिले के दौरे पर आ रही है. यह खबर सुनते ही ट्रांसफर हो चुके गुटविकास अधिकारी डॉ. प्रफुल्ल भोरखड़े को रिलीव किया गया. वे भातकुली पंचायत समिति में पदारुढ़ हो गए हैं. जिससे प्रमुख अधिकारी ही स्थायी नहीं होने से चांदूर बाजार पंचायत समिति में भागमभाग देखी जा रही है.

बोरी के किसानों ने अपनाई पट्टा बुआई पद्धति

- सोयाबीन के पौधे लद गए फल्लियों से
- सोयाबीन प्रति एकड़ 10, तुअर 6 क्विंटल होने की उम्मीद

संवाददाता, 23 सितंबर

चांदूर रेलवे- प्रतिवर्ष तहसील के किसान सोयाबीन, तुअर की बुआई बड़े प्रमाण में करते हैं, किंतु फिर भी उन्हें अपेक्षित उत्पादन नहीं मिलता. कृषि विभाग के ध्यान में आया कि किसान बंधुओं ने यदि सोयाबीन व तुअर की बुआई पद्धति बदली तो उन्हें दोनों फसलों का अच्छा उत्पादन मिल सकेगा. इसलिए चांदूर रेलवे के कृषि विभाग ने किसानों को सोयाबीन, तुअर पट्टा बुआई पद्धति से बुआई करने का आवाहन किया था. जिसके बाद तहसील में कुछ प्रमाण में किसानों ने पट्टा बुआई पद्धति से बुआई की, जिसका लाभ अब दिखाई दे रहा है. सोयाबीन के पौधों को फल्लियां ही फल्लियां लग गईं तथा सोयाबीन का उत्पादन प्रति एकड़ 10 क्विंटल तथा तुअर का प्रति एकड़ 6 क्विंटल होने की उम्मीद किसानों को है.

चांदूर तहसील स्थित बोरी के कृषि सहायक ए.डी. चौकड़े ने वहां के किसानों को पट्टा बुआई पद्धति अपनाने का आवाहन किया था. जिसके बाद बोरी के बहुभूधारक किसान गौरव शिरभाते, अतुल गुल्हाने, रवि देशमुख, मंगेश शिरभाते, शरद गुल्हाने सहित अनेक किसानों ने लगभग 105 हे. अर्थात 260 एकड़ भूमि में सोयाबीन व तुअर की पट्टा बुआई पद्धति से बुआई की. इस बुआई पद्धति ने सोयाबीन की बुआई में 3 अथवा 4 लाइन के बाद एक लाइन खाली छोड़नी पड़ती है.

उसी प्रकार सोयाबीन व तुअर की साथ में बुआई करने पर तुअर के आजू-बाजू की लाइन खाली छोड़नी पड़ती है. यही बात अनेक किसानों को पसंद नहीं, क्योंकि किसानों के अनुसार ऐसा करने से उत्पादन कम होगा किंतु वास्तव में एक लाइन खाली छोड़ने पर उत्पादन में वृद्धि होती है. इस एक लाइन के अंतर से सोयाबीन, तुअर की फसलों में हवा खेलती है तथा पर्याप्त सूर्यप्रकाश मिलता है. जिसके कारण रोग व कीटों का प्रमाण अत्यंत कम होता है. इसलिए कृषि विभाग की ओर से किसानों से पट्टा बुआई पद्धति अपनाने का आवाहन किया गया था. ऐसी फसलों का निरीक्षण करने हेतु तहसील कृषि अधिकारी राजेंद्र बांबल, मंडल कृषि अधिकारी गोपाल किल्लेकर, कृषि पर्यवेक्षक विनोद बोबड़े, कृषि सहायक ए.डी. चौकड़े सहित किसान रामा वाघाये, सागर हांडे, पुलिस पाटिल, विजय मेश्राम, सरपंचा माया मेश्राम, विजय शेंडे, सचिन बलाखे, अमोल मेश्राम आदि उपस्थित थे.

पट्टा बुआई पद्धति के लाभ

- फिलहाल की बुआई पद्धति में सोयाबीन के प्रति एकड़ 30 से 35 किलो बीज लगते हैं, किंतु पट्टा बुआई पद्धति में प्रति एकड़ 20 से 25 किलो बीज ही लगते हैं. जिसके कारण किसानों को प्रति एकड़ 1000-1200 रु. की बचत होती है.
- फिलहाल की बुआई पद्धति में सोयाबीन के 6 तास के बाद 1 तास तुअर होती है, किंतु इस पद्धति में 4 तास के बाद 1 तुअर का तास तथा तुअर के आजू-बाजू के तास खाली होते हैं. इन खाली लाइनों के कारण सोयाबीन की फसल को तो फायदा होता ही है, बल्कि तुअर की फसल का भी बड़े प्रमाण में फायदा होता है. ऐसी जानकारी बोरी के कृषि सहायक ए.डी. चौकड़े ने दी.

ग्रामीण क्षेत्र में बीमारियों की रोकथाम के लिए उपाययोजना करें

शिवाजी मैत्री संगठन ने उपविभागीय अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता, 23 सितंबर

मोर्शी- तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में डेंगू सहित टायफाइड, मलेरिया और अन्य संक्रामक बीमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है. इन बीमारियों की रोकथाम के लिए तुरंत उपाययोजना की जाए. यह मांग छत्रपति शिवाजी मैत्री संगठन की ओर से उपविभागीय अधिकारी नितिन हिंगोले को मंगलवार को सौंपे ज्ञापन में की गई.

ज्ञापन में बताया कि डेढ़ माह की अवधि में मोर्शी शहर सहित ग्रामीण क्षेत्र में डेंगू से पांच शालेय विद्यार्थियों की मृत्यु हुई है. बावजूद प्रशासन द्वारा इस गंभीर विषय को ध्यान में नहीं लिया जा रहा है. कुछ दिनों से तहसील के ग्रामीण क्षेत्र में डेंगू का प्रभाव बढ़ रहा है. 5 से 30 आयु गट के लोग बुखार से संक्रमित हो रहे हैं. उन्हें शहर के निजी व सरकारी अस्पताल में भर्ती किया गया है. डॉक्टरों का कहना है कि शहर में गंदगी का साम्राज्य और मच्छरों का प्रकोप डेंगू का कारण बन रहा है. बारिश की अनियमितता के कारण मच्छरों का प्रकोप बढ़ गया है. प्रशासन द्वारा नालियों की साफसफाई भी नहीं की जा रही है और दवा का छिड़काव नहीं करने से ग्रामीण क्षेत्र के नागरिकों में रोष व्यक्त किया जा रहा है. बीमारियों ने पांव पसारने से नागरिकों में भय का वातावरण निर्माण हुआ है. ग्रामीण क्षेत्र में एक दिन के अंतराल पर दवा का छिड़काव किया जाए और 7 दिन में एक बार नाले की सफाई की जाए.

उसी प्रकार जंगली घास निर्मूलन मुहिम चलाने की मांग छत्रपति शिवाजी मैत्री संगठन के अध्यक्ष श्रणीक राऊत, उपाध्यक्ष अंकित खवली, विनीत उबाले, प्रतीक राऊत, अमोल निस्वादे, सुभाष ठुसाम, राहुल कुकडे आदि ने की है.

बीमार महिला को स्व. गुल्हाने ट्रस्ट की मदद

संवाददाता, 23 सितंबर

नांदगांव पेठ- माहुली जहांगीर की मंगला सचिन चौधरी नामक महिला दुर्धर बीमारी से ग्रस्त है. उसे शल्यक्रिया हेतु स्व. हीराबाई गुल्हाने चैरिटेबल ट्रस्ट की ओर से उपचार हेतु आर्थिक मदद की गई. ट्रस्ट अध्यक्ष विवेक गुल्हाने, जिप सदस्य भारती गेडाम, पप्पूभाई सादिकभाई, नरेश गेडाम, पंकज चौधरी, सुयोग गुल्हाने, रमनलाल राठोड़ व राहुल गेडाम उपस्थित थे.

शासन के उदासीन रवैये से सक्कर तालाब अधूरा

संवाददाता, 23 सितंबर

चिखलदरा - चिखलदरा पर्यटन नगरी की जनसंख्या 5 हजार है. जलापूर्ति हेतु मुख्य रूप से सक्कर तालाब पर ही निर्भर रहना पड़ता है. अन्य स्त्रोतों में काला पानी तालाब तथा अंत में आमझरी का कुआं पर्यटननगरी की प्यास बुझाता है एवं अन्य तालाब वीर तालाब को पीने के अयोग्य घोषित कर वहां से की जाने वाली जलापूर्ति लगभग दस वर्षों से बंद कर दी गई है. जबकि तालाब के समीपस्थ मरीयमपुर के नागरिक अब भी अपनी आवश्यकतानुसार जलसंकलन कर उसका उपयोग कर रहे हैं. यद्यपि यह सभी तालाब अंग्रेजी शासनकाल के बने हुए हैं. जिन्हें स्वतंत्रता के उपरांत अपनी आवश्यकतानुसार विकसित एवं विस्तारित किया गया है. सक्कर तालाब के विस्तारीकरण में शासन द्वारा की गई अनदेखी से पिछले 25 वर्षों से तालाब का पानी लीक हो कर सड़क की दूसरी ओर बहने लगा. शासन की उदासीनता से पिछले 25 वर्षों में यह लीकेज बंद होने के स्थान को बदला गया. इस वर्ष फरवरी माह में जनप्रतिनिधियों की पहल पर लगभग 1 करोड़ रुपए की राशि, लीकेज बंद करने हेतु स्वीकृत कर कार्य आरंभ करने के आदेश दिए गए. किंतु फरवरी से जून माह अर्थात वर्षा आरंभ होने तक उसका कार्य पूरा करने में संबंधित अधिकारी एवं ठेकेदार असमर्थ रहे, जिसके चलते उसका कार्य अधूरा ही पड़ा है. संबंधित ठेकेदार एवं अधिकारियों की सूचना पर महाराष्ट्र जीवन प्राधिकरण द्वारा तालाब में क्षमता से 50 प्रतिशत जल संग्रह कर शेष जल, देवी प्वाइंट की ओर बहाकर व्यर्थ कर दिया जा रहा है.

पिछले 20 वर्षों से वर्षारंभ से जनवरी माह तक नियमित जलापूर्ति होती है. उपरांत में काला पानी तालब से जलापूर्ति कर दिन में दो के स्थान पर एक बार जलापूर्ति की जाती थी तथा अंत में चिखलदरा से लगभग 6 किमी. दूरी पर स्थित आमझरी के कुएं से जलापूर्ति एक दिन के अंतराल से अथवा विलंब से वर्षा होने पर दो दिन के अंतराल से भी स्थानीय नागरिकों को जलापूर्ति की जाती है. उल्लेखनीय है कि, सक्कर तालाब में 25 फुट पानी की जलक्षमता है, किं तु इस वर्ष मजीप्रा द्वारा केवल 12 फुट पानी भरने के उपरांत शेष जल यूं ही व्यर्थ बहा दिया जा रहा है. इस वर्ष पर्यटननगरी में वर्षा पिछले वर्ष की तुलना में लगभग 40 प्रतिशत कम हुई है. तालाब में क्षमता से आधा ही जल संकलन किया जा रहा है. अतः इस वर्ष दीपावली के उपरांत ही जलापूर्ति में कटौती किए जाने की संभावना है.

शासन की उदासीनता से जलकिल्लत का यह रजत जयंती वर्ष है. जन प्रतिनिधियों की उदासीनता से ब्रम्हासत्ती का प्रकल्प भी फाइलों में दब गया है. होटल व्यवसायी अपने स्तर पर टैंकरों की व्यवस्था कर सैलानियों को सेवा दे रहे हैं.